

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीसीतालम्बणभरतशङ्करहनुमत्समेत श्रीरामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

श्रीमद्रामायणे राल्मीकीये आदिकार्ये किङ्किङ्काकाण्डे
॥ त्रिषष्टितमः सर्गः ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीसीतालम्बुगभरतशङ्करहनुमत्समेत श्रीरामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

॥ त्रिषष्टितमः सर्गः ॥

सम्पातेर्नरपुञ्जोदगमस्तस्य रानराणां प्रोत्साहनं कृत्वा तत
उड्डयनं रानराणां ततो दक्षिणस्यां प्रस्थानं च

एतैरनैश्च बहुभिर्बकैर्बक्यरिशारदः।

मां प्रशस्याद्यनुज्जाप्य प्ररिष्टः स स्वमालयम् ॥ 4.63.1 ॥

कन्दरां तु रिसर्पिंरा परतस्य शनैः शनैः।

अहं रिक्त्यं समारूह्य भरतः प्रतिपालये ॥ 4.63.2 ॥

अद्य त्रेतस्य कालस्य र्षं साग्रशतं गतम्।

देशकालप्रतीक्षोहस्मि हृदि कृत्वा मुनेर्रचः ॥ 4.63.3 ॥

महाप्रस्थानमासाद्य स्वर्गते तु निशाकरे।

मां निर्दहति सन्तापो रितर्कैर्बहुभिर्बृतम् ॥ 4.63.4 ॥

उदितां मरणे बुद्धिं मुनिराकैर्निरर्तये।

बुद्धिर्या तेन मे दत्ता प्राणानां रक्षणे मम ॥ 4.63.5 ॥

सा मेहपनयते दुःखं दीप्टेराग्निशिखा तमः।

बुध्यता च मया रीर्यं रारणस्य दुरात्ननः ॥ 4.63.6 ॥

पुत्रः सन्तर्जितो राग्निर्न त्राता मैथिली कथम्।

तस्या रिलपितं श्रुत्वा तौ च सीतारियोजितौ ॥ 4.63.7 ॥

ন মে দশরথস্নেহাৎ পুত্রোৎপাদিতং প্রিয়ম্।
তস্য ৎরেৱং ব্রূৱাণস্য সংহতৈর্নানরৈঃ সহ ॥ 4.63.8 ॥

উৎপেততুস্তদা পক্ষৌ সমক্ষং বনচারিণাম্।
স দৃষ্টৱা স্মাং তনুং পক্ষৈরুদগতৈররুণচ্ছদৈঃ ॥ 4.63.9 ॥

প্রহর্ষমতুলং লেভে বানরাংশ্চদমব্রবীৎ।
নিশাকরস্য রাজর্ষেঃ প্রসাদাদমিতৌজসঃ ॥ 4.63.10 ॥

আদিত্যরশ্মিনির্দক্ষৌ পক্ষৌ পুনরুপস্থিতৌ।
যৌৱনে বর্তমানস্য মমাসীদ্ যঃ পরাক্রমঃ ॥ 4.63.11 ॥

তমেরাদ্যারগচ্ছামি বলং পৌরুষমের চ।
সর্ৱথা ক্রিয়তাং যত্নঃ সীতামধিগমিষ্যথ ॥ 4.63.12 ॥

পক্ষলাভো মমাযং বঃ সিদ্ধিপ্রত্যযকারকঃ।
ইত্যুকত্বা তান্ হরীন্ সর্ৱান্ সম্পাতিঃ পতগোত্তমঃ ॥ 4.63.13 ॥

উৎপপাত গিরেঃ শৃঙ্গাজ্জিঙাসুঃ খগমো গতিম্।
তস্য তদ্ রচনং শ্ৰুৎৱা প্রতिसংহৃষ্টমানসাঃ।
বভূবুর্হরিশাদূলা রিক্রমাভ্যুদযোন্মুখাঃ ॥ 4.63.14 ॥

অথ পরনসমানরিক্রমাঃ
প্লৱগৱরাঃ প্রতিলঙ্কপৌরুষাঃ।
অভিজিদভিমুখাং দিশং যযু -
র্জনকসুতাপরিমার্গণোন্মুখাঃ ॥ 4.63.15 ॥

॥ ইত্যর্ষে শ্রীমদ্রামাযণে ৱাল্মীকীযে আদিকাৱ্যে
কিঙ্কিকাকাণ্ডে ত্রিষষ্টিতমঃ সর্গঃ ॥